ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स एष एक एव वृदेक एव। अथर्व 13/4/20
वह ईश्वर एक है निश्चय से वह एक ही है।
God is one Surely He is the only one.

वर्ष 37, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 नवम्बर, 2013 से रविवार 17 नवम्बर, 2013
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 130वाँ निर्वाणोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के क्षमादान हमें सीखने की आवश्यकता
– महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा

संस्कृत के विनाश से भारतीय संस्कृति खतरे में
– डॉ. धर्मवीर, कार्य. प्रधान, परोपकारिणी सभा

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में आर्यसमाज के संस्थापक, युगप्रवर्त्तक, समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी का 130वां निर्वाणदिवस समारोह दिल्ली के एतिहासिक रामलीला मैदान में दीपावली के पावन पर्व पर दिनांक 3 नवम्बर 2013 को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया यह समारोह प्रात: 8 बजे से प्रारम्भ हुआ जिसमें श्रीमती प्रियंका एवं श्री कपिल बंसल, श्रीमती ऋचा एवं श्री राकेश भार्गव, श्रीमती वैशाली एवं श्री राजीव तलवार, श्रीमती उषा एवं श्री हरीश कालरा ने यजमान के रूप में भाग लिया। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक व यज्ञप्रेमी श्री मदनमोहन सलूजा जी ने की।

यज्ञ के उपरान्त प्रात: 9 बजे ओ३म् ध्वज का आरोहण प्रसिद्ध आर्यसमाज सेवी श्री अश्विनी आर्य जी के कर कमलों से किया गया ध्वाजारोहण की व्यवस्था आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के संचालक श्री जगवीर आर्य जी ने आर्यवीरों के सहयोग से की।

सार्वजनिक समारोह प्रात: 9:30 बजे प्रारम्भ हुई, जिसकी अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं प्रसिद्ध समाज सेवी महाशय धर्मपाल जी ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द क्रान्ति के अग्रदूत थे। उन्होंने विचारों का ऐसे बीज रोपित किए

दिल्ली में संस्कृत शिक्षण केन्द्र की होगी स्थापना – ब्र. राजसिंह आर्य

जो अत्यधिक तेजी के साथ विकसित हुए और आज उनका प्रभाव चहुंदिशाओं में दृष्टिगत होता है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में आर्य कन्या गुरुकुल रानी बाग की छात्राओं द्वारा सुमधुर भजन प्रस्तुत किए गए

साथ ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के एम.डी.एस. वेद प्रचार वाहन पर सेवारत भजनोदेशक श्री संदीप आर्य के भजनों ने शमां बांधा।

मुख्य अतिथि के रूप में एमिटी ग्रुप के निदेशक श्री आनन्द चौहान जी ने उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए आज के दौर में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को जीवन में उतारने का का आह्वान किया। सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की संचालिका श्रीमती मृदुला चौहान ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से प्रेरणा लेकर सच्चे आर्य बनने के लिये एवं सभी को वैदिक धर्म के पथ पर चलने के लिये ऋषि से प्रेरणा लेनी चाहिए।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने ओजस्वी वक्तव्य दिया। उन्होंने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज संस्कारों एवं वैदिक संस्कृति की रक्षा परमावश्यक है अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब हमारो देश पूर्ण रूप से पूर्ण रूप से पाश्चात्य संस्कृति में डूब

– शेष पृष्ठ 4 पर

(ऊपर) ध्वजारोहण से कार्यक्रम का आरम्भ करते श्री अश्विनी आर्य जी। (नीचे) निर्वाणोत्सव समारोह में उपस्थित आर्य जनता को सम्बोधित करते महाशय धर्मपाल जी

श्री सत्य सनातन वेद मन्दिर समिति के अन्तर्गत वेद मन्दिर सेवाश्रम का शिलान्यास

संगीमय रामकथा एवं गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ समारोह

सेवा, संस्कति और साधना का प्रकल्प – निराश्रित, नि:सन्तान एवं आजीवन वैदिक धर्म प्रचार करने वालों की वृद्धावस्था में की जाएगी पूर्ण सेवा

सेवा संस्कृति और साधना के अनूठे प्रकल्प वेद मन्दिर सेवा श्रम के भावी भवन के शिलान्यास समारोह के अवसर पर योजना का परिचय देते ब्र. राजसिंह आर्य जी। भवन का शिलान्यास एवं

शिलापट्ट का अनावरण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं विधायक श्री जयभगवान अग्रवाल जी। (विस्तृत सूचना समाचार अगले अंक में)

वेद-स्वाध्याय

वेद का त्यागी मिथ्यावादी

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति। यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।। ऋग्वेद 10/71/6

अर्थ—***(यः)*** जो जन ***(सचिविदम्)*** सहायता करने वाले मित्र समान वेद को ***(तित्याज)*** त्याग देता है ***(तस्य)*** उसका ***(वाचि अपि)*** वाणी के कथन में भी लाभ नहीं होता, लोग उसे मिथ्यावादी समझते हैं ***(ईम्)*** यह पुरुष ***(यत् शृणोति)*** जो वह सुनता है, पढ़ता है ***(अलकम् शृणोति)*** व्यर्थ ही सुनता है वह ***(सुकृतस्य पन्थाम्)*** सत्कर्मों के मार्ग को ***(नहि प्रवेद)*** नहीं जानता है।

वेद सृष्टि का आदि संविधान है जिसका आविर्भाव चार ऋषियों के हृदय में हुआ। वेद जीवन दर्शन या आचार संहिता है जिसमें सभी वर्ण-आश्रम, राजा, प्रजा, गुरु-शिष्य, पति-पत्नी आदि सभी के कर्त्तव्य कर्मों का उदाहरण सहित बहुत ही सरल और ललित भाषा में उपदेश दिया गया है। यद्यपि अन्य धर्मों के अनुयायी अपने धर्म-ग्रन्थों को खुदा या परमात्मा द्वारा दिया ज्ञान ही बतलाते हैं परन्तु जब उन्हें कसौटी पर कसा जाये तो यह बात सही सिद्ध नहीं होती। कोई पुस्तक ईश्वरकृत है या नहीं इसके लिये निम्न कसौटियाँ हैं—

१. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में आना चाहिये क्योंकि उसी समय उसकी आवश्यकता होती है। वेदों का समय वही है जो सृष्टि-उत्पत्ति का जिसे आर्यजन संकल्प करते समय पढ़ते हैं। जबकि पारसियों की जेन्दावस्था तीन-साढ़े तीन हजार, बाइबिल दो हजार और कुरान चौदह सौ वर्ष से पुरानी नहीं है।

२. ईश्वरीय पुस्तक में सृष्टिक्रम के विरुद्ध ज्ञान नहीं होगा। जैसे कुरान में लिखा है खुदा के तख्त को फरिश्तों ने उठाया हुआ है। आसमान खम्भों पर टिका हुआ है। इसी भाँति बाइबिल में कहा है—खुदा की रूह पानी पर तैरती थी। खुदा ने छः दिन में सृष्टि की रचना की और सातवें दिन विश्राम किया। आदम की एक पसली को निकाल उससे हव्वा को बनाया। स्त्रियों में आत्मा नहीं होती आदि।

३. ईश्वरीय ज्ञान में अनित्य इतिहास या देश विशेष का वर्णन नहीं होना चाहिये। ईश्वर के नित्य होने से उसका ज्ञान भी नित्य है। इस कसौटी पर वेद ही खरे उतरते हैं। उनमें जो ऐतिहासिक प्रकरण आते हैं। वे नित्य इतिहास हैं। व्यक्तियों के नहीं। जो नाम नदियों या राजाओं के आते हैं उनका अर्थ भी व्यक्ति विशेष न लेकर यौगिक ही लेना चाहिये। ऋषियों ने वेदों से ही व्यक्ति या नदी, स्थान-विशेष का नामकरण किया है। मनुस्मृति में कहा है—

सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्। वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे॥ मनु० १.२९॥

४. ईश्वरीय ज्ञान में परस्परविरोधी कथन या विवरण नहीं हो सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है अत: उसका ज्ञान भी निर्भ्रम और सार्वकालिक है। अन्य मतावलम्बियों के ग्रन्थों को देखने से पता चलता है कि वे अल्पज्ञ मानवों की कृतियाँ हैं जिनमें पक्षपात, द्वेष एवं अनर्गल कथाओं का समावेश और वे जातिविशेष या देश की परिस्थिति को देखकर लिखे गये हैं।

५. ईश्वरीय ज्ञान की लौकिक विज्ञान एवं क्रियाओं में समानता होनी चाहिये। जैसे बाइबिल में पृथ्वी को चटाई की भाँति चपटी बताया है। परन्तु वेदों में पृथिवी को गोल और उसे सूर्य के चारों ओर घूमने का स्पष्ट वर्णन किया है। यथा—

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

यजु० ३.६

६. ईश्वरीय ज्ञान में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का समुचित वर्णन होना चाहिये। बाइबिल में खुदा को चौथे और कुरान में सातवें आसमान में बतलाया है और वेद में उसे सर्वव्यापक, निराकार, न्यायकारी आदि बहुत गुणों वाला कहा है।

७. ईश्वरीय ज्ञान की भाषा किसी देश-विशेष की न होकर अलौकिक ही होनी चाहिये। सृष्टि के आदि में अन्य दूसरी भाषाओं के न होने से ईश्वर ने वैदिक भाषा में ही वेदों का ज्ञान दिया जो अन्य भाषाओं का मूल है।

ऐसे **सचिविदं सखायम्** मित्र के समान परम हितैषी, सन्मार्ग दर्शक और समस्त ज्ञान-विज्ञान के आदिमूल वेद का जो **तित्याज** परित्याग कर देता है **न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति** उसकी वाणी विश्वसनीय नहीं होती। लोग उसे मिथ्यावादी समझते हैं। वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक और परमात्मा की वाणी होने से स्वत: प्रमाण है। इसलिये मनुस्मृति ने **वेदोऽखिलो धर्ममूलम्** अर्थात् समस्त वेद धर्म-कर्त्तव्यकर्मों को बताने वाला कहा है। आगे कहा है—

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्। स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ मनु० २.१६८॥

जो द्विज वेद को छोड़ अन्यत्र श्रम करता है वह अपने पुत्र-पौत्रादि सहित जीते हुये ही शूद्र भाव को प्राप्त हो जाता है।

अन्य ग्रन्थ परत: प्रमाण हैं। यदि उनका कथन वेद के अनुकूल है तो उनकी बात मानी जा सकती है। वेद के प्रतिकूल होने पर उनका कथन मान्य नहीं है। **यदीं शृणोत्यलकं शृणोति** वेदविरुद्ध ग्रन्थों से जो सुना-सुनाया जाता है, वह व्यर्थ है क्योंकि **नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्** अन्य जाल ग्रन्थों में सत्कर्मों के मार्ग का ज्ञान बहुत ही न्यून है और जो है वह टेढ़े-मेढ़े मार्ग के समान है। आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसा 'सागर में गोता लगाना और मोतियों का पाना।' इसके विपरीत वेद एवं वेदानुकूल ऋषियों के ग्रन्थों के स्थान पर मनुष्यकृत ग्रन्थ ऐसे ही हैं जैसे 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया'।

वेदा मे परमं चक्षुर्वेदा मे परमं बलम्। वेदा मे परमं धाम वेदा मे ब्रह्म चोत्तमम्॥

वेद ज्ञान के भण्डार हैं। इनके स्वाध्याय से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल की प्राप्ति होती हे। वेद परमधाम मुक्ति को प्राप्त कराने वाले हैं और सर्वोत्तम ब्रह्म का ज्ञान कराने वाले हैं।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -
आर्य केंद्रीय सभा गाजियाबाद (उ.प्र.) के प्रधान श्री सुभाष सिंहल जी द्वारा एकत्र राशि

814	सर्वश्री शिवराज गुप्ता	5000
815	प्रेमपाल मिथलेश शर्मा	2100
816	मंगलसेन गर्ग	1100
817	प्रमोद-रेखा गर्ग	500
818	प्रमोद कुमार गुप्ता	2100
819	मनोज अग्रवाल	500
820	विष्णु-पीयूष गोयल	2100
821	श्रीमती उषा रानी	5000
822	सुरेन्द्र गर्ग	11000
823	श्रीमती हेमलता गुप्ता	2000
824	रविन्द्र सिंह	1000
825	वेद प्रकाश तोमर	1100
826	लव तोमर	1100
827	श्रीमती रेखा गोयल	2100
828	श्रीमती जया रानी	2100
829	एस. पी. सिंह	3100
830	अखिलेश खरे	500
831	श्रीमती सुमन जिन्दल	250
832	प्रतुल कुमार अरोड़ा	150
833	विजय कुमार मित्तल	1000
834	यशपाल काठपाल	500
835	हरवीर सिंह	500
836	अमित कुमार	600
837	सतपाल	500
838	श्रीमती पुष्पा गुप्ता	500
839	बृजपाल गुप्ता	500
840	बी. एन. महेश्वरी	201

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 91001000898 4897
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री

स्त्री शिक्षा से ही आलोकित होता है समाज

- आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी

किसी राष्ट्र को सशक्त एवं आत्म निर्भर बनाने का सर्वोत्तम उपाय-स्त्री-शिक्षा है। किसी राष्ट्र की सशक्तता का प्रमाण हथियारों से लैस होना नहीं, बल्कि राष्ट्र का नैतिक चरित्र है। कोई भी छुरी, बन्दूक, पिस्तौल आदि रखकर भी अपने आपको सुरक्षित नहीं कह सकता। अत: सात्त्विक वृतियाँ, आत्मनिष्ठा ही राष्ट्र को सबल बना सकती हैं, यह मानना ही होगा।

प्रश्न यह है कि इस आत्मनिष्ठा का मूलस्रोत हमें कहाँ प्राप्त होगा? उत्तर भी स्पष्ट है कि परमेश्वर ने सृष्टि रचना कर प्रजा पालन का भार जिसको सर्वप्रथम सौंपा वही दिव्य शक्ति सम्पन्न नारी ही सन्तान को आत्मनिष्ठ एवं सुसंस्कारित बना सकती है। परमात्मा ने सबको उसकी क्षमतानुसार ही कार्य सौंपा है। इस प्रकार जिस नारी के कन्धों पर प्रजा पालन रूपी राष्ट्रीय गुरुतर भार हो उसे सुशिक्षित होने की आवश्यकता नहीं, यह प्रश्न ही कैसे उठ सकता है?

किन्तु बीच के काल में यही हुआ। नारियों को शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। उनको बच्चे उत्पन्न करना और गृहकार्य करना ही धारणा बना ली गई। कहीं नौकरी तो करनी नहीं? यदि यह पढ़ जायेंगी तो ऊटपटांग चिट्ठियां लिखा करेंगी इत्यादि बातें कही जाने लगीं।

श्री शंकराचार्य जैसे प्रतिष्ठा प्राप्त धर्माचार्यों तक ने स्त्री के लिये बृहदारण्यकोपनिषद् के-

"अथ य इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत" (बृह. 6/4/17)

इस वाक्य के पण्डिता शब्द का भाष्य करते हुये लिखा- **"दुहितु: पाण्डित्यं गृहतन्त्रविषयमेव वेदेऽनधिकारात्"** अर्थात् कन्या को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं, अत: उसको पण्डिता बनाने का अर्थ है गृहस्थ के कार्यों की शिक्षा देना।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में तत्कालीन समाज एवं धर्माधिकारियों के अत्यन्त हीन एवं तुच्छ विचार हो गये थे, इसलिए पण्डिता शब्द का मात्र गृहस्थ के कार्यों में शिक्षित होना अर्थ किया गया, यह प्रमाण ही पर्याप्त है।

परिणाम सामने आया - राष्ट्र निर्बल हो गया। देश गुलाम होकर पिटा ही नहीं अपने गुलामी के जीवन से उसने खुशामद पसन्द होकर तादात्म्य भी स्थापित कर लिया। सत्यनिष्ठ आदि आचरण ऐतिहासिक कथायें मात्र बनकर रह गईं। अत्यन्त यातनाओं से गुजरने के पश्चात् देश का भाग्य जागा और राष्ट्रोद्धारक ऋषि दयानन्द का उद्भव हुआ। उन्होंने अकाट्य प्रमाणों और युक्तियों के आधार पर यह सिद्ध कर दिया कि स्त्री शिक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। इस मध्ययुग के गिरे हुए काल से पूर्व की स्त्रियाँ प्रभूत विद्या-सम्पन्न हुआ करती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा आदि ब्रह्मवादिनी ऋषिकायें इसकी प्रमाण हैं। इतना ही नहीं, वेद पढ़ने का अधिकार स्त्रियों को न देने वाले श्री शंकराचार्य के समक्ष मण्डनमिश्र के हार जाने पर स्वयं उनकी पत्नी विदुषी भारती शास्त्रार्थ के लिये डटी थीं। तब शंकराचार्य के लिये भारती से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया और वह कह उठे-

यदवादि वादकलहोत्सुकतां,
प्रतिपद्यते हृदयमित्यबले।
तदसाम्प्रतं नहि महायशसो,
महिलाजनेन कथयन्ति कथाम्।।

(शंकरदिग्विजय सर्ग 9/59)

अर्थात् हे अबले! तुम मुझसे शास्त्रार्थ करना चाहती हो किन्तु यशस्वी पुरुष महिलाओं के साथ शास्त्रार्थ नहीं करते। भारती भी सहज में उन्हें छोड़ने वाली नहीं थीं, उसने कहा-

अत एव भार्गर्यभिधया कलह,
सह याज्ञवल्क्यमुनिराडकरोत्।
जनकस्तथा सुलभयाऽबलया,
किममी भवन्ति न यशोनिधय:।।

(सर्ग 9/61)

अर्थात् शंकराचार्य जी! आपको अपने पक्ष की रक्षा के लिये शास्त्रार्थ करना ही होगा। क्या गार्गी के साथ याज्ञवल्क्य ने तथा सुलभा के साथ जनक ने शास्त्रार्थ नहीं किया था। क्या वे यशस्वी पुरुष नहीं थे।

इन सभी ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करते हुये ऋषि दयानन्द ने वेद पठनादि अपने अधिकारों से च्युत नारी को समस्त अधिकारों से युक्त कराया। महर्षि दयानन्द ने वह करके दिखाया जो आज तक बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान् एवं सुधारक नहीं कर सके थे। इधर देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्ति की लहर को दौड़ाने वाले कुछ राष्ट्रनायकों ने भी अनुभव किया कि यह क्रान्तिरूपी अनुष्ठान हमारा तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक नारियों का पवित्र योगदान इसमें न हो, अत: उन्होंने भी रुढ़िग्रस्तताओं को छोड़कर स्वतन्त्रता यज्ञ में भाग लेने के लिये उनका आह्वान किया। यह नारी की असीम क्षमता और साहस का ही परिचायक कहा जा सकता है कि वह युगों-युगों तक दासता की बेड़ियों में जकड़े होते हुये भी अपना आह्वान सुनते ही सजग हो उठी और वह इस यज्ञ में भी पीछे न रही। ऐसा अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति अदिति स्वरूपा नारी को शिक्षा का अधिकार नहीं या वेद पढ़ने का अधिकार नहीं, यह कहते हुये जब आज भी मैं दकियानूसी पण्डितों के मुख से सुनती हूँ तो यही कहना पड़ता है कि ये पण्डित होकर भी दिवान्ध ही हैं।

वेदों में माता के कर्त्तव्यों के विशद वर्णन आते हैं। ऋग्वेद में, 4 सू. 18 मं. में कहा है कि **'सूर्यसम तेजस्विनी माता'** सन्तान की गुहा=बुद्धि में पराक्रम को प्रविष्ट कराये, दुष्टाचरणों को दूर करे। इसी सूक्त के प्रथम मन्त्र में सन्तानों को उपदेश दिया गया है कि चाहे कुछ भी हो जाये वे अपनी माता का अपमान कभी न करे। माता शब्द बड़ा प्रिय है, इसकी महिमा अपार है। यह राष्ट्र निर्माण का मेरुदण्ड है। माता के द्वारा दिये हुए संस्कारों का सन्तान के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है यह महापुरुषों की जीवनियों को देखकर सहज ही जाना जा सकता है। इन तथ्यों को देखते हुये यह कहने में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि पुत्री, जिसे आगे चलकर सुयोग्य पत्नी एवं माता का रूप धारण करना है अथवा विरक्तवृत्ति धारण कर भी समाज को आलोक देना है उसका गठन एक प्रकार के विशेष संस्कारों के साँचे में ढालकर करना ही होगा। जिस भवन को विशाल एवं दृढ़ बनाना है उसकी नींव पक्की करनी ही होगी, इसलिये ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में नारी शिक्षा पर इतना बल दिया है।

आज कुछ लोग नारी जागरण के नाम पर पुरुषों के समान अधिकार की बड़ी पुकार करते हैं। जिस प्रकार साम्यवाद का अर्थ यह करना कि समाज हित की दृष्टि से बुद्धिबल के भिन्न-भिन्न होते हुए भी समान वितरण व्यवस्था की जाय' यह गलत होगा, उसी प्रकार स्त्री पुरुष में भेद होते हुए भी पुरुषों के समान नारियों को अधिकार मिले, इसका यह तात्पर्य लगाना कि नारियों का पुरुषीकरण कर दिया जाये, गलत होगा। जिस प्रकार साम्यवाद का अर्थ यह उचित होगा कि आवश्यकतानुसार प्रत्येक को उपभोग वस्तु सुलभ कराई जाये उसी प्रकार समानाधिकार की माँग करने वालों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि नारी के कर्तव्य और मर्यादायें भिन्न हैं तथा पुरुष के भिन्न हैं, अत: उसी अनुरूप प्रत्येक को अपना प्राप्तव्य मिलना चाहिये। समान अधिकार का मतलब रहन-सहन, उठने-बैठने, पहरावे उठावे में उनका एकीकरण कर देना नहीं है बल्कि विद्या अर्जन करने, संन्यास वानप्रस्थादि प्रत्येक आश्रमों में प्रवेश करने, विचारों के आदान प्रदानादि में स्त्रियों का भी पूरा-पूरा अधिकार होगा है। यह न भूलना चाहिए कि समान अधिकार से तात्पर्य यदि पुरुष के बराबर प्रतिष्ठा या महिमा प्राप्त करना लिया जाये तो वेदों में तो नारी को पुरुष के समान क्या पुरुषों से भी कहीं अधिक महिमामय कहा है। नारी के ब्रह्मा जैसे उत्तम विशेषणों तक विभूषित किया गया है। आज सहशिक्षादि का ऐसा बुरा प्रभाव नारियों पर पड़ता जा रहा है कि उनके रहन-सहन, वेश-विन्यास सब बदलते जा रहे हैं। आज राह चलते पुरुष और स्त्री में कोट-पैन्टादि वेश एवं केश कर्तनादि सभी समान होने के कारण यह परिचय प्राप्त करना कि इसमें कौन सी स्त्री एवं कौन पुरुष है, कठिन हो गया है। निर्लज्जता एवं धृष्टता अब आँखों में समाकर अंग-अंग को आपूरित करती जा रही है। गौरव पूर्ण मातृत्व की न चाह है न उत्कण्ठा ही। कई जगह तो ठगी लूट और मक्कारी करती हुई स्त्रियां भी पकड़ी जा रही हैं और गौरवशाली भारत के समक्ष यह प्रश्न तीव्रतर होकर उभरता जा रहा है कि क्या यह नारी भारत की दुर्गा और सीता का प्रतिमान है? ऐ बूढ़े भारत! तूने इस देश की नारी के उस चरित्रबल को भी देखा है, जब राजपूतानियों ने परपुरुष के द्वारा कुदृष्टि से हाथ तक का स्पर्श किये जाने पर उस हाथ को यह कहकर तीव्र दुधारे से काट दिया था कि यह हाथ अब पति सेवा के योग्य नहीं रहा। तूने सीता माता की पवित्रता एवं आत्मबल तथा सभा को धर्षित करने वाला शकुन्तला का तेज तथा पद्मिनी का जौहर व्रत भी देखा है; पर आज यह सब क्यों स्वप्न होता जा रहा है? नारी उस सरणी की अनुगामिनी क्यों बनती जा रही है जिसकी कोई कगार नहीं, यह चिन्तनीय विषय है।

संक्षेप में इसका कारण हमारी पाश्चात्य कुशिक्षा ही है, जिसके हम अनुगामी बिना सोचे समझे हो रहे हैं। हमें अपनी वैदिक पद्धतियों को अपनाना होगा। घर-घर में उसका प्रचार और प्रसार करना होगा। फैशनपरस्ती की बाढ़ को रोककर मनुष्य के आत्मिक ढाँचे को सुपुष्ट बनाना होगा। समय रहते ऐसी वैदिक मर्यादा सम्पन्न शिक्षा को बड़े यत्न से नारियों में पुन: विकसित करने की आवश्यकता है अन्यथा शिक्षा का मूल उद्देश्य हमसे बहुत दूर निकल जायेगा और हमें आँसू बहाने पड़ेंगे।

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की अनेक जानकारियां। आप पढ़ें, इष्टमित्रों को भी पढ़ाएं और सदस्य बनें और बनाएं।

वार्षिक सदस्यता : 250/- आजीवन सदस्यता 1000/-

प्रथम पृष्ठ का शेष

जाएगा। उन्होंने कहा कि संस्कृत के विनाश से भारतीय संस्कृति खतरे में है। उन्होंनेआह्वान करते हुए कहा कि आर्यसमाज का बुद्धिजीवी वर्ग इस दिशा में आगे आकर कार्य करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा कि दिल्ली में शीघ्र ही गुरु विरजानन्द संस्कृति शिक्षण केन्द्र की स्थापना की जाएगी।

विशिष्ट अतिथि के रुप में प्रसिद्ध समाज सेवी श्री अनिल तलवार जी ने भाग लिया।

इस समारोह में प्रसिद्ध आर्य संन्यासी श्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक तथा आर्यनेता श्री रामनाथ सहगल का सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर **आचार्य धनञ्जय शास्त्रीजी** को ''स्वामी विद्यानन्द सरस्वती वैदिक विद्वान पुरस्कार'' **श्री सुरेन्द्र चौधरी जी** को, ''डा. मुमुक्षु आर्य पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार'' एवं **श्री चन्द्रमोहन आर्यजी** को ''अमर शहीद मेजर डॉ. अश्विनी कण्व स्मृति पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया।

समारोह में दिल्ली के समस्त आर्य समाजों से बड़ी संख्या में आर्य नर-नारियों, स्कूली एवं गुरुकुलीय बच्चों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दली सभी वेद प्रचार मण्डलों, आर्यसमाजों, द्वारा संचालित विद्यालयों, गुरुकलों एवं सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने सोल्लास भाग लिया। - ***राजीव आर्य, महामन्त्री***

यज्ञ सम्पन्न कराते आचार्य यशपाल जी एवं यजकुण्ड में अग्नि प्रज्वलित करते यजमान दम्पति

उद्बोधन देते सर्वश्री आनन्द चौहान, डॉ. धर्मवीर जी, राजीव आर्य, ब्र. राजसिंह आर्य, रामनाथ सहगल एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य

स्वागत एवं सम्मान : श्री प्रवीण सिंह (न्यूजीलैंड) एवं श्री भुवनेश खोसला (अमेरिका); श्री सुरेन्द्र चौधरी; श्री चन्द्रमोहन आर्य पत्रकार का सम्मान किया गया।

स्वागत एवं सम्मान : आचार्य धनञ्जय शास्त्रीजी सपत्नीक, श्री आनन्द चौहान जी सपत्नीक, श्री रामनाथ सहगल जी को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

महाशय धर्मपाल जी, माता प्रेमलता शास्त्री का स्वागत।

नई पुस्तक 'दयानन्द सागर' का विमोचन

गुरुकुल रानी बाग की प्रस्तुति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

6-7वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन

19 जनवरी, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) | **2 फरवरी, 2014 : आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, दिल्ली**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार, 19 जनवरी 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवां आयोजन 2 फरवरी, 2014 को होगा। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जनवरी, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 15 जनवरी, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। - **अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)**

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH

हवन सामग्री

मात्र 70/- किलो

(5,10, 20 किलो की पैकिंग में उपलब्ध)

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -1, दूरभाष - 23360150

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) को निम्न पदों के लिए आवश्यकता है-

1. **हिन्दी प्रूफ रीडर** जो प्रूफ रीडिंग के साथ-साथ सम्पादन कार्य में भी रूचि रखते हों। हिन्दी-अंगेजी दोनों की योग्यता वालों को प्राथमिकता।
2. **साहित्य प्रचारक** जो विभिन्न पुस्तक मेलों में जाकर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार कर सकें एवं स्टाल पर आने वाले जिज्ञासु को सन्तुष्ट कर सकें।
3. **सेल्समैन** - जो सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य को जहां-तहां विक्रय कर सके तथा विक्रय हेतु आर्डर ला सके।
4. **प्रबन्धक** जो आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित कराने का कार्य कर सके।
5. **उपदेशक/प्रचारक/ भजनीक :** सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की की भी आवश्यकता है।

सभी पदों के लिए गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। सभी पद पूर्णकालिक हैं। सम्बन्धित क्षेत्र से सेवानिवृत्त भी आवेदन कर सकते हैं। इच्छुक आवेदक अपना बायोडाटा निम्न पते पर भेजें/ ईमेल करें।

महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 9958174441
Email:aryasabha@yahoo.com

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

ओ३म्

देहरादून चलो! ऋषि भक्तो हरिद्वार चलो!

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून के 90 वार्षिकोत्सव,
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा हरिद्वार
एवम्
पुण्य भूमि दर्शन यात्रा कार्यक्रम

शनिवार, दिनांक 21 दिसम्बर से सोमवार 23 दिसम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यात्रा व्यवस्था

2X2 की पुश-बैक डिलक्स बसों द्वारा आना-जाना, अतिथि गृह / धर्मशाला में रहना, हरिद्वार भ्रमण, भोजन व्यवस्था तथा शोभायात्रा के लिए टोपी/दुपट्टा व झंडा आदि सेवाएँ हेतु प्रति व्यक्ति 1000 रूपये मात्र देय होगा।

दिनांक	समय	कार्यक्रम
21.12.2013	रात्रि: 9.00 बजे	देहरादून को प्रस्थान
22.12.2013	प्रात: 5.00 बजे	देहरादून पहुँचकर नित कर्म व नाश्ता से निवृत होकर आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के 90वें वार्षिकोत्सव में शामिल होना।
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोहपर 2.00 बजे	हरिद्वार को प्रस्थान व हर की पौढ़ी भ्रमण
	सायं 6.00 बजे	गुरुकुल कांगड़ी पहुँचना व भोजन
23.12.2013	प्रात: 8.00 बजे	नाश्ता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में
	प्रात: 9.00 बजे	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा
	दोपहर 1.00 बजे	ऋषि लंगर
	दोपहर 2.00 बजे	पुण्य भूमि के लिए प्रस्थान
	सायं 5.00 बजे	दिल्ली के लिए प्रस्थान
	रात्रि 10.30 बजे	दिल्ली पहुँचना

जो आर्यजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आयोजित इस यात्रा में जाने के इच्छुक हों वे यात्रा संयोजक श्री सतीश चड्ढा जी से मो. 9540041414 पर सम्पर्क करें।

अपने निजी साधनों/अन्य माध्यमों से समारोह में भाग लेने के लिए पहुंचने वाले सज्जन भी सभा कार्यालय को अपने पधारने की सूचना दें, ताकि उनके लिए भी समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराई ज सकें। - **विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441**

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें

गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

हास्य-व्यंग्य

घोषणा पत्र बिकाऊ है

– डॉ. पूर्ण सिंह डबास

सत्संग में होने वाले शांति पाठों का अपने राम पर ऐसा दुष्प्रभाव पड़ा कि लड़ने के नाम से ही कंपकंपी चढ़ने लगी। इसीलिए चुनाव, जोकि लड़ा जाता है, मैं कभी नहीं लड़ सका। नतीजा यह निकला कि नेता नाम के राष्ट्रीय कमाऊ पूतों की श्रेणी में दीक्षित होने के सारे सपने धरे के धरे रह गए। एक बार उत्साहित होकर जिला स्तर की एक राष्ट्रीय पार्टी का गठन भी किया, और उसका नाम भी बड़ा जोरदार रखा– धमाका पार्टी। इस पार्टी का, दस बिन्दुओं वाला, अर्थात् एक दस नम्बरी चुनाव घोषणा पत्र भी तैयार किया लेकिन चुनाव के ऐन मौके पर अपनी पुरानी कमजोरी फिर आगे आ खड़ी हुई और किसी कृष्ण के अभाव में अपना रथ चुनाव के कुरुक्षेत्र से वापिस लौट आया। तभी से धमाका पार्टी का वह चुनाव घोषणा पत्र बेकार पड़ा हुआ है। लेकिन अब, जबकि जगह-जगह चुनाव-युद्ध की भेरी बजने लगी है, सोचता हूँ इसे जारी कर दूँ। मेरे काम नहीं आया तो किसी और का ही भला हो जाए। हाँ शर्त यह है कि जो भी चुनाव-योद्धा या दल इसका इस्तेमाल करे, वाजिब दाम देना न भूले। तो दस नंबरी चुनाव घोषणा पत्र आपकी सेवा में नीचे हाजिर है।

1. देवियों और सज्जनों! आज की ज्वलंत समस्या उदारीकरण है। इस विषय में हमारी पार्टी की नीति है कि यह उदारीकरण और साथ ही निजीकरण पर बल देगी। अपनी पुरानी संस्कृति **'उदारचरितानाम् तू वसुधैव कुटम्बकम्'** (उदार लोगों के लिए तो यह पूरी धरती ही कुटंब है) से प्रेरणा लेकर हमारी पार्टी की सरकार इतनी उदार बन जाएगी कि नागरिक सरकारी और राष्ट्रीय सम्पति का बेखटके निजीकरण कर सकेंगे। उदारीकरण करने के लिए जनता जनार्दन को प्रेरित किया जाएगा। सड़कों के साथ, सौभाग्य से खाली बच गए फुटपाथों पर कब्जा करवा कर अधूरी पड़ी कब्जा-प्रक्रिया को पूर्णता प्राप्त करवाई जाएगी। फुटपाथों पर पनपने वाले व्यापार से हमारे व्यापार जगत को नई प्ररेणा और दिशा मिलेगी। फुटपाथी व्यापार की इस स्वदेशी टैक्नीक का यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाएगा। यूरोप के देश क्या खाक विकसित देश है जिनके महानगरों में इतने मूल्यवान फुटपाथ आज तक खाली पड़े है। इसके लिए कानून में संशोधन करके निर्वाचित प्रतिनिधियों को अधिकार दिया जाएगा कि वे दो-दो लाख रु. की दक्षिणा लेकर फुटपाथों पर दुकानें आवटित कर सके।

पुलिस को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा कि वह निगम-कर्मचारियों और स्थानीय माफिया के साथ मिलकर जगह-जगह पार्किंग-स्थल कायम कर सके। जो थाना इस शुभ कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेगा उसके एस.एच.ओ. को अगली पोस्टिंग में और भी ज्यादा कमाऊ थाना प्रदान किया जाएगा।

2. हमारी पार्टी सरकारी तंत्र के सड़े-गले ढांचे का पुनर्गठन करेगी। बेकार पड़े कुछ मंत्रालय और विभाग बंद कर दिए जाएंगे और बाकी को नया रुप दिया जाएगा। अनेक नए मंत्रालयों की स्थापना की जाएगी और उनमें एक-एक मंत्री भी स्थापित किया जाएगा। इन नए मंत्रालयों में वायदा मंत्रालय, बयान मंत्रालय, घोषणा मंत्रालय तथा घोटाला मंत्रालय मुख्य होंगे। वायदा मंत्री जनता से तरह-तरह के मधुर वायदे करेगा और वायदा पूरा न होने पर मौलिक बहानों का आविष्कार करेगा या दोष विपक्ष पर मढ़ देगा। बयान मंत्री निरन्तर बयान जारी करेगा जिसमें विपक्षी सरकारों को बर्खास्त करने, दोषी पाए जाने पर राजनीति से संन्यास लेने तथा विरोधियों से इस्तीफा मांगने जैसे बयान बार-बार दोहराए और छपवाए जाएंगे। जारी बयानों को जरुरत के मुताबिक वापिस लेने का, उनसे मुकरने का तथा उनमें तोड़-मरोड़ करने की जिम्मेदारी भी यही मंत्री निभाएगा। घोषणा मंत्री सरकार की सम्भव-असम्भव सभी प्रकार की योजनाओं और कल्पनाओं की घोषणा करेगा। जैसे कि राजधानी में साल भर की अवधि में पचास फ्लाई ओवर बनाए जाएंगे, एक्सप्रैस हाइवे का निर्माण किया जाएगा, साइकिल ट्रैक बनाए जाएंगे, फुटपाथ खाली करवाए जाएंगे तथा मक्खी-मच्छरों की हरकतों पर पाबंदी लगाई जाएगी। घोषणा मंत्री इन या इन जैसी सभी योजनाओं के शुभारंभ के लिए 15 अगस्त या 2 अक्तूबर की पावन तिथियों की घोषणा करेगा लेकिन यह सावधानी बरतेगा कि इन तारीखों के साथ सन् का उल्लेख बिल्कुल न किया जाए। घोटाला मंत्रालय नई घोटाला नीति तैयार करेगा। इस नीति के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के लिए क्रान्तिकारी घोटाला योजनाएँ बनाई जाएंगी ताकि जो नेता पहले की योजनाओं से लाभान्वित नहीं हो सके वे इन नई योजनाओं से अपना उद्धार कर सकें।

3. धमाका पार्टी की सरकार एक विशेष विभाग का गठन करेगी जिसका नाम होगा : **आमूल-चूल परिवर्तन विभाग।** यह विभाग सीधे पार्टी-मुखिया के निर्देशन में काम करेगा। यह विभाग, बहुत दिन मजे कर चुके, अमीरों को गरीबों की श्रेणी में पहँचाएगा और दीन-हीन गरीबों को अमीरी का मजा चखाएगा। शहरों को गाँवों में बसाया जाएगा और गाँवों को शहरों में शिफ्ट किया जाएगा। माइनॉरिटी को मैजॉरिटी में बदलेगा और मैजॉरिटी को माइनॉरिटी बनाएगा। नस्ल-भेद खत्म करने के लिए कालों को गोरों से और गोरों को कालों से शादी करना अनिवार्य किया जाएगा। इसके साथ ही खर्चीली चुनाव प्रक्रिया को समाप्त किया जाएगा। फिल्मों से प्रेरणा लेकर मैदान में कूदे उम्मीदवारों से, उनके समर्थकों की उपस्थिति में, द्वन्दयुद्ध और मल्लयुद्ध कराए जाएंगे और जो विजयी होगा उसे निर्वाचित घोषित किया जाएगा। इस प्रक्रिया से ज्यादा से ज्यादा बाहुबली लोकसभा और विधान सभाओं में पहुँचेंगे और देश मजबूत बनेगा। सर्वश्रेष्ठ बाहुबली को लोकसभा के अध्यक्ष पर बैठाया जाएगा जिससे अनुशासन कायम करना आसान हो जाएगा।

4. शिक्षा और सफाई विभाग बंद कर दिए जाएंगे। बच्चों को पहले निरक्षर बनाया जाएगा और जब वे कुछ सीखने लायक यानी प्रौढ़ हो जाएंगे तब उन्हें साक्षर बनाने का अभियान चलाया जाएगा। जरुरत पडेगी तो बच्चे बुजुर्गों से शिक्षा ग्रहण करेंगे। या मांओ से कुछ सीख लेंगे। देश के माल को हजम करने के लिए इससे ज्यादा पढ़ाई-लिखाई की आवश्यकता नहीं होती। जब तक यह शिक्षा-नीति पूरी तरह लागू नहीं हो जाती तब तक पब्लिक स्कूलों के बच्चों को सरकारी स्कूलों में ट्रांसफर कर दिया जाएगा और पब्लिक स्कूल वालों को सरकारी स्कूलों में। सफाई विभाग बंद कर दिया जाएगा। नागरिक खुद सफाई का जिम्मा सम्भालेंगे। सरकार उन्हें पार्कों में कूड़ा-कर्कट फेंकने की छूट देगी ताकि पड़ौस में ही खाद बनता रहे।

5. झोंपड़-पट्टी विभाग में नई जान फूंकी जाएगी। यह विभाग मौका लगने पर शहर के बीचों-बीच और मौका न लगने पर शहर के बाहरी हिस्सों में नई-नई झोंपड़-पट्टियों का विकास करेगा। जनसेवा और पार्टी के वोट बैंक को ध्यान में रखते हुए ऐसी अनधिकृत बस्तियों का जाल बिछाया जाएगा और उन्हें अधिकृत करवाने के कार्य को प्राथमिकता दी जाएगी। यह प्राथमिकता इतनी दीर्घजीवी होगी कि दर्जनों सरकारों के कार्यकाल को पार कर जाएगी। जो-जो पुलिस कर्मी और नगर निगम के कर्मचारी अनधिकृत निर्माण में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे उन्हें बारी से पहले तरक्की दी जाएगी।

6. दूसरे दलों की दलदल से निकलकर हमारे दल की दलदल में फंसने के इच्छुक महापुरुषों के लिए दरवाजे और सूटकेस खुले रखे जाएंगे ताकि उनको किसी प्रकार की असुविधा न हो। इसके साथ-साथ भ्रष्टाचार को उद्योग का दर्जा दिया जाएगा जिससे भ्रष्टाचारियों की उपेक्षा खत्म होगी और वे राष्ट्र के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान और भी बढ़-चढ़कर दे सकेंगे। संविधान में संशोधन किया जाएगा और भ्रष्टाचार को नागरिक के मूल अधिकारों में शामिल किया जाएगा।

7. विपक्षियों को राजनीति से संन्यास दिलवाने के लिए युवा पुरोहितों के कमांडो दस्ते बनाए जाएंगे। ये दस्ते विपक्षियों को पकड़-पकड़ कर उन्हें संन्यास की दीक्षा देंगे और उनसे राजनीति से संन्यास ले लेने के बयान जारी करवाएंगे। इसके साथ-साथ और भी अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए जाएंगे और फिर नीचे रखे जाएंगे।

8. प्रदूषण को रोकने के लिए घुड़सवारी और गधसवारी को प्रोत्साहित किया जाएगा। जब घुडसवारी हो सकती है तो गधसवारी क्यों नहीं हो सकती? इन जानवरों के चारे की समस्या हल करने के लिए प्रांत विशेष के चाराखोरों द्वारा विकसित टैक्नीक उपयोग में लाई जाएगी।

9. पैट्रोल-डीजल वाहनों पर यह पाबंदी लगाई जाएगी कि वे दिन के समय सड़कों पर नहीं निकल सकेंगे। बिजली-चोरी को नागरिकों के मौलिक अधिकारों में शामिल किया जाएगा। अपराधों को सुलझाने के लिए पुलिस को भले आदमियों को पकड़ने की छूट दी जाएगी। माल की ढुलाई में तेजी लाने के लिए दुपहिया स्कूटर चालकों को ऐसी आधुनिकतम ट्रेनिंग दी जाएगी कि वे स्कूटर की पिछली सीट पर भैंस को बैठाकर अस्पताल ले जा सकें। इसके लिए विश्व प्रसिद्ध 'पटना सर्कस' की सेवाएँ प्राप्त की जाएंगी।

10. लोकपाल की जगह नेतापाल विधेयक लाया जाएगा क्योंकि लोक चाहे पले या न पले, नेता का पलना निहायत जरुरी है। नेता नहीं पलेगा तो लोग आँख मींच कर किसके पीछे चलेंगे? 'नेता क्रय-विक्रय' नाम से एक राष्ट्रीय कोष की स्थापना की जाएगी और एक 'नेता स्टॉक ऐक्सचेंज' बनाया जाएगा ताकि इच्छुक नेता वहाँ पर अपने आपको सूचीबद्ध करा सकें और जरुरतमंद पाटियाँ बाजार भाव पर उन्हें खरीद सकें।

– एम-93, साकेत, नई दिल्ली-17
मो. 9818211771

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज मालवीय नगर का
62वां वार्षिकोत्सव
समापन एवं वेद सम्मेलन
17 नवम्बर, 2013
यज्ञपूर्णाहुति : प्रात: 8 से 10 बजे
ब्रह्मा : ह्रपं. आरक्षित शास्त्री
वक्ता : आचार्य विश्वमित्र मेधावी
आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री
आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन : पं. भानू प्रकाश शास्त्री
अध्यक्षता : डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
मुख्य अतिथि : डॉ. पूर्ण सिंह डबास
- सुभाष कुमार चांदना, मन्त्री

विशाल बंगीय वेद प्रचार सम्मेलन
आर्यों का महाकुम्भ
16 से 17 नवम्बर, 2013
स्थान : विद्यासागर हॉल, मेदिनीपुर शहर रेडक्रॉस अस्पताल के सामने, कोलकाता
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर वेदामृतपान करें।
- पं. वेद प्रकाश शास्त्री, मन्त्री

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन का
21वां वार्षिकोत्सव
समापन एवं वेद सम्मेलन
17 नवम्बर, 2013 यज्ञ: प्रात: 8:30 बजे
मुख्य वक्ता : आचार्य जयेन्द्र शास्त्री
भजन : श्री श्यामवीर राघव
अध्यक्षता : श्री रविन्द्र मेहता
मुख्य अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य
विशिष्ट अतिथि : श्री विनय आर्य
श्री राजीव आर्य
- जवाहर भाटिया, प्रधान

आर्यसमाज निर्माण विहार का
28वां वार्षिकोत्सव
समापन एवं आर्य सम्मेलन : 17 नवम्बर
यज्ञ पूर्णाहुति : प्रात: 7:30 बजे से
मुख्य वक्ता : ब्र. राजसिंह आर्य
अध्यक्षता : श्री प्राणनाथ कुमार
- रवि बहल, मन्त्री

आर्यसमाज थापर नगर मेरठ का
स्वर्णजयन्ती समारोह
16 से 17 नवम्बर, 2013
- राजेश सेठी, मन्त्री

आर्यसमाज नोएडा का
भव्य वार्षिकोत्सव
18 से 22 दिसम्बर, 2013
वेद कथा : आचार्य सोमदेव शास्त्री
भजन : श्री पं. घनश्याम प्रेमी
महिला एवं बलिदान सम्मेलन
22 दिसम्बर, 2013
- कै. अशोक गुलटी, मन्त्री

गुरु विरजानन्द दण्डी का 235 वां जन्मदिवस सम्पन्न

आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम् सैक्टर-4-7 गुडगांव में दण्डी स्वामी प्रजाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती का 235वां जन्मदिवस एवं सामवेद पारायण यज्ञ समारोह के साथ 25 से 27 अक्तूबर तक मनाया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा पं. शिवदत्त शास्त्री थे। इस अवसर पर भजन पं. बलराम आर्य एवं प्रवचन डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार के हुए। *- ओम प्रकाश आर्य, प्रधान*

ओड़िशा के तूफान पीड़ितों की खुले हृदय से सहायता करें

टी. वी. समाचार पत्र आदि से सभी को ज्ञात हो गया होगा कि ओड़िशा का समुद्र तट क्षेत्र तूफान से बहुत क्षतिग्रस्त हो गया। गंजाम आदि इलाकों में तूफान से भयंकर तबाही हुई है। इस तूफान से लाखों घर नष्ट हो गये वे निराश्रित होकर खुले मैदान में पड़े हैं, ओड़िशा के सबसे पुरानी आर्यसमाज पोलसरा, कन्या गुरुकुल तनरड़ा की गौशाला तथा गुरुकुल आश्रम कुन्दुली की गौशाला की छतें पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई हैं। ऐसी आपत्तिकाल में पीड़ितों की सहायता करना आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य मानता है अन्यथा विदेशी मिशन इसका लाभ उठाते हैं।

गुरुकुल आश्रम प्रत्येक आपत्ति के समय में जनता जनार्दन की सहायता करता आ रहा है। इस बार भी सहायता का विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि यथाशीघ्र अधिक से अधिक सहयोग करके पीड़ित लोगों की सहायता कर भगवान का आशीर्वाद लें। इन पीड़ित लोगों को नए कम्बल, तालपत्री आदि की सहायता देनी है। अपनी सहायता S.B.I खरियार रोड़ में गुरुकुल आश्रम आमसेना के खाते नं. 11276777048 के द्वारा अथवा चैक ड्राफ्ट के रुप में भेजने की कृपा करें। *- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक, गुरुकुल आश्रम आमसेना*

'अद्यतन हिन्दी-कविता : नए सन्दर्भ' का लोकार्पण

विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुज, हरिद्वार के तत्त्वाधान में, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (पश्चिमी दिल्ली) की ओर से आर्य समाज, जनकपुरी के विशाल सभागार में लोकार्पण संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'अद्यतन हिन्दी-कविता : नए सन्दर्भ' का लोकार्पण भी किया गया। महाकवि 'निराला' के बाद की हिन्दी कविता के नवीन प्रयोगों, अभिव्यक्ति कौशल, विसंगत परिवेश, युगीन आतंक -संत्रास-अपराध की प्रवृत्ति, राजनीतिक छलन्छद्म, बढ़ती महंगाई आम आदमी की दुर्दशा, बिम्ब-प्रतीक-मिथक और बहु-आयामी काव्य-भाषा का विवेचन करने वाली इस पुस्तक का लोकार्पण आस्ट्रेलिया से आए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवराज पथिक, शिक्षा विभाग के उपनिदेशक श्री जंग बहादुर एवं वैदिक वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने संयुक्त रुप से किया। विमोचन करत हुए डॉ. पथिक ने कहा कि काव्यालोचक प्रो. कथूरिया ने इस ग्रन्थ में समय की करवटों के साथ बदलती काव्य-चेतना और अद्यतन हिन्दी-कविता के नये संदर्भो की अच्छी पहचान और परख की है। नि:सन्देह यह कृति समकालीन हिन्दी काव्य-समीक्षा के क्षेत्र में एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। *- खैराती लाल, संयोजक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार
मुम्बई पुस्तक मेला
स्थान : बान्द्रा कुर्ला परिसर, मुम्बई
29 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013 : प्रात : 11 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें
-: निवेदक :-
विनय आर्य, महामन्त्री *सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक*

लेख पुरस्कृत
आर्यसमाज और अन्तर्जातीय विवाह वर्तमान परिपेक्ष्य में

पंजाबी वैलफेयर सोसायटी अलवर के मुख्य पत्र ''पंजाबी धारा'' मासिक के जुलाई अंक में प्रकाशित लेख ''आर्य समाज और अन्तर्जातीय विवाह वर्तमान परिपेक्ष्य में'' को प्रथम पुरस्कार दिया गया है। 'पंजाबी धारा' की पुरस्कार चयन समीति ने उक्त लेख के लेखक कोटा के श्री अर्जुनदेव चढ्डा, जिला प्रधान आर्यसमाज को प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार राशि का चैक प्रदान किया।
- अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का
वैदिक प्रकाशन विभाग
प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/-
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/-
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/-
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/-
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/-
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/-
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी. का सैट	100 /-
8.	वैदिक विनय	150/-
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/-
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/-
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/-
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /- सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /- सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/-
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/-
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/-
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/-
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/-
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/-
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/-
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/-

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।
अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 नवम्बर, 2013 से रविवार 17 नवम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14/15 नवम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 नवम्बर, 2013

विश्वव्यापी आर्य समाज के समाचार

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

चण्डीगढ़ पुस्तक मेला

स्थान : परेड ग्राउंड, सै.-17, चण्डीगढ़ : स्टाल नं. 104

13 नवम्बर से 18 नवम्बर, 2013

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें

–: निवेदक :–

विनय आर्य, महामन्त्री *सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

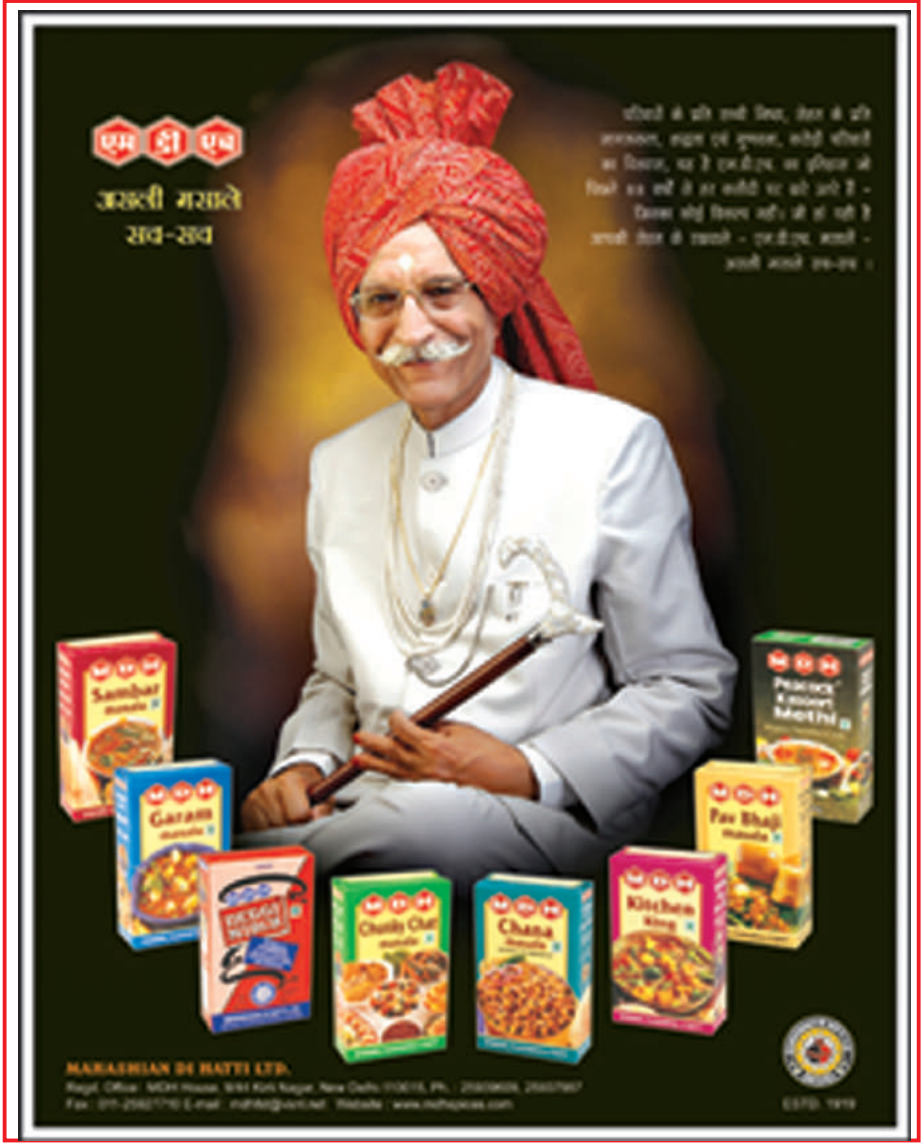

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/– रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर